डॉ. राकेश जोशी

देहरादून, उत्तराखंड

भूखा रहकर मर गया, कल फिर इक इंसान
तू तो कहता रह गया, तेरा देश महान

कलयुग में कल फिर हुई, बड़ी अनोखी बात
पूछा सच से झूठ ने, तेरी क्या औक़ात

पेड़ों के पत्ते हुए, कल बेहद हैरान
कोई भी टूटा नहीं, आया जब तूफ़ान

वो लड़ता है आज भी, लेकिन सब बेकार
तू बैठा आकाश पर, देखे उसकी हार

तू भी करता काज है, वो भी करता काज
तेरे सर पर बोझ है, उसके सर पर ताज

हम सब का है बस यही, इतना-सा संसार
एक अधूरी दास्तां, एक अधूरा प्यार

कितना निष्ठुर है भला, तेरा ये दरबार
सदियों से है कर रहा, हम पर अत्याचार

तू भी तो तय्यार है, मैं भी हूँ तय्यार
आओ मिलकर हम चलें, बदलें ये संसार

कितनी ऊँची हो गई, दुनिया की दीवार
तू शायद उस पार है, मैं शायद इस पार

सोच रहा हूँ बैठकर, घायल मैं लाचार
मेरा तुझ पर अब नहीं, कोई भी अधिकार

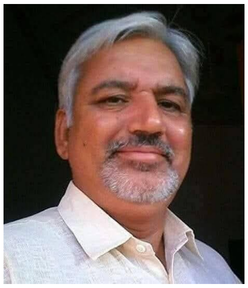

राजपाल सिंह 'गुलिया'

झज्जर, हरियाणा

लिए नींद जब आ गई , सपनों की सौगात ।
कटी एक कंगाल की , राजमहल में रात ॥

बूँद मेघ को छोड़कर, करती रही मलाल ।
गर्व करे अब भाग्य पर, मिला भरा जो ताल ॥

डाल दिए हथियार जो , लड़े बिना ही जंग ।
पता चलेगा किस तरह, कौन हमारे संग ॥

बिना बात ही आप जो, बढ़ा रहे हैं बात ।
लगा आप भी चाहते , हो कुछ तो उत्पात ॥

बेटी मरी गरीब की, था किसका षडयंत्र ।
मिला धनिक के साथ में, खड़ा समूचा तंत्र ॥

ये अच्छा है वो बुरा , रहा जगत को आँक ।
कभी किसी दिन बैठकर , अन्तर्मन में झाँक ॥

माँ - बेटे के बीच में , अद्भुत प्यार - दुलार ।
माँ से पिटता पुत्र भी , माँ को रहा पुकार ।।

लगी दिहाड़ी जब नहीं , उभरा तभी ख़याल ।
दुर्दिन शायद कर रहे , साकेतिक हड़ताल ।।

फूल खिला था बाग में , ले ढेरों अरमान ।
उसको झट से तोड़ कर , फैंक गया नादान ।।

मात - पिता हैं काम पर , दादा - दादी गाँव ।
अब आया की गोद में , बच्चा खोजे ठाँव ।।